

समाचार वाणी

खबर जो करें असर !

नाशिक | Tuesday, 22 September 2026

बिहार चुनाव में कंरारी हार के बाद नई राह पर प्रशांत किशोर, जन सुराज के भविष्य को लेकर तैयार नई रणनीति

Publisher

Published on 17 Nov 2025



बिहार विधानसभा चुनाव के नतीजों ने कई समीकरण बदलकर रख दिए, लेकिन सबसे बड़ा झटका जिस चेहरे को लगा, वह थे **प्रशांत किशोर**। चुनाव से पहले जन सुराज आंदोलन को लेकर जिस उम्मीद, उत्साह और बड़े बदलाव की बात पीके करते रहे थे, वह परिणामों में नजर नहीं आई। पार्टी को अपेक्षित सफलता नहीं मिली और यह हार पीके और उनके समर्थकों के लिए गहरा सदमा साबित हुई। लेकिन प्रशांत किशोर की पहचान ही यही रही है कि वे असफलता को अंत नहीं, बल्कि एक नई शुरुआत का मोड़ मानते हैं। यही वजह है कि चुनावी पराजय के बाद भी वे राजनीति से पीछे हटने के मूड में नहीं हैं।

करीबी सूत्र बताते हैं कि प्रशांत किशोर को इस हार की बिल्कुल उम्मीद नहीं थी। जन सुराज के लिए उन्होंने दो साल से अधिक समय तक पैदल यात्रा, संवाद, सामाजिक अध्ययन और राजनीतिक विश्लेषण का लंबा दौर चलाया था। उनके समर्थकों को विश्वास था कि इस चुनाव में जन सुराज एक प्रभावशाली शक्ति बनकर उभरेगी और बिहार की राजनीति में हलचल मचा देगी। लेकिन नतीजे उम्मीदों के उलट रहे। इसके बावजूद पीके इसे अंतिम पड़ाव मानने के बजाय आत्मविश्लेषण और पुनर्गठन का अवसर देख रहे हैं।

चुनाव परिणामों के बाद कई राजनीतिक विश्लेषकों ने यह अटकलबाजी शुरू कर दी थी कि प्रशांत किशोर अब राजनीति छोड़ देंगे और एक बार फिर से अपने पुराने चुनावी रणनीतिकार वाले रोल में लौट सकते हैं। मगर ऐसा लगता नहीं है। पीके ने बेहद स्पष्ट कर दिया है कि उनकी राजनीतिक यात्रा अभी खत्म नहीं हुई है। वे चुनाव में मिली हार को स्वीकारते हुए अब जन सुराज को और अधिक जमीन से जोड़ने और संगठन को मजबूत करने का लक्ष्य बना रहे हैं।

सूत्र बताते हैं कि प्रशांत किशोर अब अपने संगठन में बड़े बदलाव करने वाले हैं। वे हार के कारणों का विस्तृत विश्लेषण कर रहे हैं—कहाँ कमियाँ रहीं, किन क्षेत्रों में जन समर्थन अधूरा था, किस स्तर पर संगठन कमजोर पड़ा, किस तरह जनता तक संदेश पहुंचा और कहाँ वह अधूरा रह गया। इसके आधार पर वे नए नेताओं को अवसर देने, पुराने ढाँचे को सुधारने और रणनीति में

व्यापक बदलाव की तैयारी कर रहे हैं।

इसके साथ ही पीके अब बिहार के गांवों और छोटे कस्बों में फिर से पदयात्रा शुरू करने पर विचार कर रहे हैं। उनका मानना है कि जनता से सीधा संवाद ही उनकी सबसे बड़ी ताकत है। चुनावों में हार के बावजूद जन सुराज की अवधारणा को उन्होंने छोड़ने से इंकार कर दिया है। उनका कहना है कि यह सिर्फ चुनाव लड़ने का संगठन नहीं, बल्कि एक सामाजिक-राजनीतिक सुधार आंदोलन है, जिसे समय चाहिए और निरंतर प्रयासों की जरूरत है।

बताया जा रहा है कि आने वाले महीनों में जन सुराज का एक बड़ा पुनर्गठन अभियान शुरू किया जाएगा। इसमें स्थानीय स्तर पर समितियों का गठन, युवा कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करना, महिला नेतृत्व को आगे लाना और पंचायत स्तर पर राजनीतिक स्कूल स्थापित करना शामिल हो सकता है। पीके इस बात पर जोर दे रहे हैं कि हार ने उन्हें अधिक अनुशासित, तैयार और लक्ष्य को लेकर स्पष्ट बना दिया है।

चुनावी शिकस्त के बाद भी प्रशांत किशोर की ऊर्जा, दृढ़ता और भविष्य को लेकर उनका आत्मविश्वास दर्शाता है कि वे बिहार की राजनीति का हिस्सा बने रहेंगे और अपनी अवधारणा को जमीन पर उतारने के लिए लगातार काम करते रहेंगे। हार को वे अंत नहीं, बल्कि एक नई शुरुआत की तरह देख रहे हैं। जन सुराज के लिए यह अगला चरण महत्वपूर्ण होगा, क्योंकि अब पीके इसे सिर्फ आंदोलन नहीं, बल्कि व्यापक सामाजिक-राजनीतिक सुधार मिशन के रूप में विकसित करने की दिशा में कदम बढ़ा चुके हैं।

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Publisher, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsoever.